4

प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में अधिगम संवर्धन हेतु शिक्षण सहायक सामग्री की भूमिका

अशोक कुमार*
संदीप कुमार**

सभी बच्चों में जानने और समझने की एक अंतर्निहित प्रवृति होती है। जानने की इसी प्रवृत्ति के कारण बालक अपने आस-पास के वातावरण से बहुत सी बातों को स्वयं ही सीखता/समझता है। इस प्रकार से सीखने को शिक्षा के संदर्भ में अनौपचारिक रूप से सीखना कहा जाता है। एक निश्चित आयु के बाद अभिभावक अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा की अपेक्षा के साथ प्राथमिक विद्यालय में दाखिला कराते हैं जहाँ बच्चों को कुछ विशेष शिक्षण विधियों एवं तकनीकी के माध्यम से निश्चित पाठ्यक्रम को निर्धारित समय में पढ़ाया जाता है। जिसके फलस्वरूप बच्चों का संज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक आदि पक्षों का विकास होता है। परंतु सामान्य अवलोकन से दिखाई देता है कि कक्षा-कक्ष की पढ़ाई को लेकर बच्चों का उत्साह सदैव एक जैसा नहीं बना रहता है। इसके फलस्वरूप या तो बालक प्राथमिक स्तर पर ही विद्यालय छोड़ देता है या शिक्षा को बोझ मानकर पढ़ाई करता है। इस प्रकार धीरे-धीरे बच्चों के सीखने की प्रवृत्ति में भी गिरावट दिखाई देती है। इस गंभीर समस्या को संज्ञान में लेते हुए दिल्ली के विद्यालयों में प्राथमिक स्तर पर संचालित हैप्पीनेस पाठ्यक्रम के संदर्भ में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को समझने का प्रयास किया गया है और इस लेख के माध्यम से इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में अधिगम संवर्धन हेतु शिक्षण सहायक सामग्री की भूमिका पर चर्चा की गयी है।

साधारण शब्दों में शिक्षा का अर्थ बच्चों को वास्तविक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है तथा उन्हें चारों तरफ़ के वातावरण से अवगत कराना है। शिक्षा एक जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है जो औपचारिक, अनौपचारिक तथा निरोपचारिक रूप से चलती ही रहती है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षण अधिगम मुख्यरूप से औपचारिक प्रकृति का होता है अर्थात जिसमें शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया कुछ औपचारिकताओं के साथ पूर्ण होती है, जैसे— निश्चित समय में निश्चित पाठ्यक्रम को निश्चित शिक्षण विधियों द्वारा पूरा किया जाता है जिसे औपचारिक शिक्षा कहते हैं। औपचारिक शिक्षा

**असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, बी.एड. विभाग, एस.सी.ई.आर.टी., डिफेन्स कालोनी, दिल्ली 24
***असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, करिकुलम एंड पैडागॉजी, डाइट, दरियागंज, दिल्ली

© NCERT not to be republished

के द्वारा प्राथमिक स्तर पर बच्चों के व्यवहार को एक निश्चित आकार दिया जाता है जो विद्यालयी शिक्षा तक ही सीमित होता है। इस प्रकार जब तक विद्यालयी शिक्षा औपचारिक रूप से व्यवस्थित नहीं होती है, तब तक अध्यापक द्वारा बच्चों का संपूर्ण विकास नहीं हो सकता है। और फिर परिवार, समाज एवं राष्ट्र के अनुरूप बच्चों को अच्छा नागरिक भी नहीं बना सकते हैं। इस तरह अध्यापक बच्चों को उनके वास्तविक जीवन के लिए तैयार नहीं कर पाता है जिसका भुगतान बच्चों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से स्वयं करना पड़ता है। अतः बच्चों के संपूर्ण विकास व वास्तविक जीवन की समस्याओं को सही रूप से समझने और उन्हें हल करने के लिए औपचारिक शिक्षा का योगदान काफी होता है। कक्षा-कक्ष की शिक्षा अर्थात् औपचारिक शिक्षा को उचित रूप से समझने हेतु कक्षा-कक्ष को समझना अनिवार्य हो जाता है। प्राथमिक स्तर के बच्चों में जानने की प्रवृत्ति, उनकी जिज्ञासाओं का ज्ञान और विषयवस्तु को प्रभावी ढंग से साझा करने की समझ के साथ-साथ शिक्षण अधिगम सामग्रियों का चुनाव एवं प्रस्तुतिकरण कक्षा को जीवंत बनाने के लिए आवश्यक होता है।

प्राथमिक स्तर

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो शिक्षा में आयु, वातावरण और पूर्व अनुभव की अहम भूमिका होती है। इसलिए शिक्षा का ढाँचा भी इन्हीं आधारों पर बनाया जाता है। विद्यालयी शिक्षा में मुख्य रूप से प्राथमिक स्तर की शिक्षा को वर्तमान 10 + 2 वाली स्कूल व्यवस्था से अलग *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में 5+3+3+4 ढाँचे में पुनर्गठित किया गया है। इस नये ढाँचे में फाउंडेशनल (आँगनवाड़ी केयर 3 वर्षीय और कक्षा 1–2 को संगठित), प्रीप्रेटरी (कक्षा 3–5) एवं मिडिल (कक्षा 6–8) के स्वरूप में रखा गया है। प्राथमिक स्तर (कक्षा 1–8) तक शिक्षा में एक शिक्षक को शिक्षण अधिगम हेतु बच्चों की रुचियों, जिज्ञासाओं एवं मानसिक स्तर के अनुरूप प्रस्तुत करना चाहिए, जिससे भविष्य की चुनौतियों का सामना करते हुए बच्चे भविष्य में अच्छे नागरिक बन सकें।

हैप्पीनेस पाठ्यचर्या

बच्चों में सीखने की अंतर्निहित प्रवृत्ति होती है तथा वे जन्म से जिज्ञासु होने के साथ-साथ उनका न्याय और सत्य की ओर झुकाव होता है। बच्चों की इस मौलिकता/प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए शिक्षा में उन सभी आयामों को सम्मिलित किया जाता है जिससे वे अपनी सभी जिज्ञासाओं एवं आवश्यकताओं को पूरा करने की योग्यता हासिल कर सकें। अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में अपनी आवश्यकताओं के प्रति आत्मनिर्भर हो सकें। आवश्यकताओं को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं, यथा— भौतिक और अभौतिक। भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षा में विभिन्न प्रकार के कौशलों (कार्य शिक्षा, व्यावसायिक एवं प्रबंधन आदि) को प्राप्त करते हैं जिससे बच्चों में इस प्रकार के कौशल को करने का आत्मविश्वास आ जाता है। अभौतिक आवश्यकता जिसमें सम्मान, स्नेह, विश्वास, कृतज्ञता, खुशी आदि को सम्मिलित

© NCERT not to be republished

किया जाता है, जिससे बच्चों में स्वयं के प्रति विश्वास पैदा हो सके।

प्राथमिक स्तर के बच्चों को उनकी आयु के अनुसार उनकी भौतिक और अभौतिक आवश्यकताओं की पहचान हेतु हैप्पीनेस पाठ्यचर्या में विभिन्न गतिविधियों, कहानियों, वर्तमान में ध्यान देने की प्रक्रिया एवं अनुभवों की अभिव्यक्ति के द्वारा बच्चों में विशेष रूप से अभौतिक आवश्यकताओं की पहचान एवं समझ बनायी जाती है। हैप्पीनेस पाठ्यचर्या में खुशी के तीन स्तरों (इन्द्रियों द्वारा— क्षणिक खुशी, संबंधों द्वारा— गहरी खुशी और समझ द्वारा— स्थायी खुशी) में से बच्चे इन्द्रियों के माध्यम सूचनाओं को प्राप्त करके खुशी का अनुभव करते हैं, और फिर समझ/ज्ञान को प्राप्त करने के लिए उनका रुझान काफी उत्साहित होता है। (प्रस्तुत लेख में केवल इन्द्रियजन्य उत्साहित पूर्वक सीखने पर ही सीमित रखा गया है।) जिससे प्राथमिक स्तर की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में जुड़े सभी अध्यापकों को इन्द्रियजन्य शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग करके शिक्षण को प्रभावी बनाया जा सकता है।

कक्षा-कक्ष में हैप्पीनेस

आप और हम भी स्व-निरीक्षण पूर्वक देख/समझ सकते हैं कि बच्चे जो भी कुछ करते हैं वह खुशी (हैप्पीनेस) के लिए ही करते हैं। सभी के खुशी के तरीके अलग-अलग होते हैं, जैसे— खेल-कूद, स्वादिष्ट भोजन या अपनों के साथ खुशी (हैप्पीनेस) का अनुभव होता है। जबकि इसके आलावा अध्ययन, अध्यापन, सहभागिता, सहयोग, सृजनात्मक गतिविधियाँ आदि भी हैं, जहाँ पर बच्चे खुशी महसूस करते हैं और बच्चे इन खुशी के क्षणों के साथ सदैव बने रहना चाहते हैं। इसलिए ये स्पष्ट होता है कि कक्षा-कक्ष शिक्षण में भी बच्चों के संपूर्ण विकास हेतु प्राथमिक स्तर पर कक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया इस प्रकार संचालित हो कि बच्चे खुशी एवं जुड़ाव महसूस करें। अगर बच्चे कक्षा-कक्ष के शिक्षण में खुशी एवं जुड़ाव महसूस करगें तो निश्चित ही वो विषयवस्तु को समझेंगे तथा सीखने व समझने की प्रक्रिया में मन लगाएँगे और उनकी विचार प्रक्रिया और भी मज़बूत हो पाएगी। परिणामस्वरूप बच्चों की जिज्ञासा और बढ़ेगी, बच्चे अधिक जानने की ओर उन्मुख होंगे। इस संदर्भ में *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005)* इस बात को स्पष्ट करती है कि शिक्षा को आत्म अन्वेषण तथा स्वयं को गहराई से जानने की प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए। बच्चों में जानने और जिज्ञासा की यह प्रक्रिया तभी संभव है जब कक्षा-कक्ष का वातावरण खुशियों से भरा हो। अत: एक शिक्षक, कक्षा में बच्चों को विषयवस्तु की समझ स्थायी रूप से तभी करा सकता है जब उसकी संपूर्ण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया शिक्षण सहायक सामग्री द्वारा इस प्रकार नियोजित हो कि बच्चे अपने आपको सहज एवं जानने के लिए उत्साहित हो सकें।

दिल्ली के विद्यालयों में संचालित हैप्पीनेस का संप्रत्यय

दिल्ली के विद्यालयों में प्राथमिक स्तर पर चलाए जा रहे हैप्पीनेस का संप्रत्यय ए. नागराज (1999) द्वारा प्रस्तावित एक जीवन विद्या मॉडल पर आधारित है, जो खुशी/हैप्पीनेस को वस्तुनिष्ट रूप से स्पष्ट करता है। यह मॉडल मानव जीवन के चारो आयामों, यथा—

© NCERT not to be republished

व्यावहारिक, व्यावसायिक, वैचारिक और अनुभव से संबंधित है। इन आयामों से ही बच्चों की संवेदनाएँ, भावनाएँ, समझ तथा जागरूकता जुड़ी हुई हैं। इन सभी आयामों को एक साथ देखें तो इनसे हैप्पीनेस त्रय (Happiness Triad) का निर्माण होता है, जो निम्न प्रकार है —

हैप्पीनेस

1. संवेदनाओं से — क्षणिक सुख
2. संबंधों में स्थिर भाव से — दीर्घकालीन सुख
3. समझ और सजगता से — स्थायी सुख

हैप्पीनेस त्रय (Happiness Triad)

संवेदनाओं वाला सुख पाँचो इन्द्रियों से जन्य होता है, इसलिए शुरुआती स्तर पर बच्चों को यही सुख अच्छा लगता है। इस तरह प्राथमिक स्तर पर बच्चों की शिक्षा में यह आवश्यक हो जाता है की शिक्षण-अधिगम में इन्द्रिय जनित शिक्षण सामग्रियों का भरपूर प्रयोग हो, जैसे— अच्छी भाषा, श्रव्य-दृश्य सामग्रियों और विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा स्वयं करने के अवसर, बच्चों को खुशी का अनुभव कराते हैं। जिसके आधार पर शिक्षक और बच्चों के संबंध भी मधुर बन जाते हैं तभी बच्चे और शिक्षक आपस में खुशी का अनुभव करते हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में शिक्षा कौशल के साथ-साथ मूल्यपरक शिक्षा पर भी बल दिया गया है। यह तभी संभव है जब सभी बच्चे कक्षा में आपस में जुड़ाव महसूस करेंगे। जुड़ाव होने से एक-दूसरे के साथ अच्छे से घुल-मिल कर वार्तालाप और अच्छा होगा, जिसके फलस्वरूप विषयवस्तु का चिंतन, मनन एवं विश्लेषण ध्यानपूर्वक समझा जा सकता है जो बच्चों को स्थायी खुशी की ओर अग्रेषित करने में सफल होता है।

अधिगम का अर्थ

अधिगम से अभिप्राय बच्चों के व्यवहार में स्थायी परिवर्तन होने से है। बच्चे कुछ निरीक्षण, परीक्षण, अवलोकन, वाद-विवाद या स्वयं करके सीखते हैं तो उनके संज्ञान में अनुभवों का एक संगठन बनता है जिसके फलस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन होता है। परंतु कुछ परिवर्तन घटना विशेष से अस्थायी रूप में दिखाई देते हैं, उनको हम अधिगम की श्रेणी में नहीं रखेंगे। किसी भय या प्रलोभनवश बच्चा कोई अस्वीकार्य व्यवहार प्रदर्शित कर सकता है परंतु वह उसके स्थायित्व को नहीं दर्शाता है। इसलिए जो व्यवहार बालक समझ कर प्रदर्शित करता है, वही अधिगम की श्रेणी में रखा जा सकता है। अब चूँकि शिक्षा किसी न किसी रूप में चलती ही रहती है इसलिए शिक्षा की तरह अधिगम भी एक जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। जिसमें बच्चे जन्म से लेकर मृत्यु तक किसी न किसी रूप में सीखते ही रहते हैं। बच्चों के सीखने की इस प्रक्रिया को अनौपचारिक प्रक्रिया कहते हैं चूँकि बच्चे स्वयं परिवार और वातावरण के साथ परस्पर क्रिया करके या अनुसरण विधि से सीखते रहते हैं। लेकिन जब बच्चों के औपचारिक रूप से सीखने की बात आती है तो शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया

© NCERT not to be republished

महत्वपूर्ण हो जाती है। क्योंकि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक मात्र उद्देश्य होता है कि बच्चों का संपूर्ण विकास हो सके। इस तरह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की भूमिका बच्चों के अधिगम में महत्वपूर्ण होती है। यूँ तो बच्चे सीखने की कई अवस्थाओं से गुजरते हैं, जैसे— शैशवावस्था, बाल्यावस्था और किशोरावस्था आदि लेकिन इन सभी अवस्थाओं में बच्चों का बाल्यावस्था के दौरान सीखना अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि बचपन के शरुआती दौर में बच्चे का मानसिक और शारीरिक विकास बहुत तीव्रगति से होता है इसलिए क्या पढ़ाया जाए, कैसे पढ़ाया जाए, इसको समझना महत्वपूर्ण ही नहीं अनिवार्य हो जाता है। इस प्रकार यदि बच्चों को शिक्षण साहयक सामग्री के द्वारा पढ़ाया जाए तो इनका अधिगम संवर्धन होगा और बच्चे अधिगम की प्रक्रिया में उत्साही होकर भाग भी लेंगे। अधिगम को कई प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों ने परिभाषित किया है, जिनमें 'स्किनर' ने कहा— प्रगतिशील व्यवहार व्यवस्थापन की प्रक्रिया को सीखना कहते हैं। (महिमा गुप्ता, 2009) इसी के संदर्भ में जे. पी. गिल्फोर्ड महोदय ने कहा है कि व्यवहार के फलस्वरूप, व्यवहार में किसी प्रकार का परिवर्तन आना ही सीखना अथवा अधिगम है। इस तरह प्राथमिक स्तर के बच्चों के सीखने में इन्द्रिय जनित संवेदनाओं का स्थान महत्वपूर्ण होता है, इसलिए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में इन्द्रिय जनित शिक्षण अधिगम सामग्री का स्थान भी बच्चों में खुशी भर देता है। इसके उपरांत भी अधिगम की प्रक्रिया को कुछ तत्व प्रभावित करते हैं, जो इस प्रकार है—

मनोवैज्ञानिक तत्व

मुख्य रूप से मनोवैज्ञानिक तत्वों में प्रबलन को शामिल किया जाता है क्योंकि प्रबलन के अभाव में सीखना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। प्रबलन में प्राथमिक स्तर पर इन्द्रियजन्य पुरस्कार और सम्मान आदि को शामिल करते हैं। इससे बच्चों के अंदर सीखने के भाव को प्रबलन द्वारा ही स्फुरित किया जा सकता है। इसलिए प्रबलन बच्चों के सीखने को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

शारीरिक तत्व

बच्चों के सीखने में शारीरिक तत्वों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। बच्चों के जीवन में घटने वाली हर प्रक्रिया इससे प्रभावित होती है। इस प्रकार पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ (आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा) एवं पाँचों कर्मेन्द्रियाँ (मुख, हाथ, लिंग, गुदा और पैर) बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। क्योंकि बच्चे ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा सूचनाओं को संज्ञान में ग्रहण करते हैं और कर्मेन्द्रियों द्वारा सूचनाओं को व्यक्त करते हैं। मिल्टन ने इन पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ को ज्ञान का प्रवेश द्वार कहा है। शारीरिक थकान, मादक वस्तुओं का सेवन, तनाव और बीमारी आदि पर सीखने का विपरीत असर पड़ता है।

वातावरण के तत्व

बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले तत्वों में वातावरण का भी विशेष स्थान है क्योंकि वातावरण भी बच्चों के सीखने को प्रभावित करता है। कक्षा, परिवार, समाज तथा विद्यालय का वातावरण बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को काफी प्रभावित करते हैं।

शिक्षण सहायक सामग्री

शिक्षण सहायक सामग्री वह सामग्री है जो कक्षा में या अन्य शिक्षण परिस्थितियों में लिखी गई व बोली गई हो। सहायक शिक्षण सामग्री पाठ्य विषयवस्तु को समझने में सहायता प्रदान करती है। शिक्षण-अधिगम सामग्री अध्यापन के दौरान न केवल विद्यार्थियों में विषयवस्तु के प्रति रुचि उत्पन्न करती है अपितु यह ऐसी सामग्री है जो बच्चों का ध्यान केंद्रित कर उन्हें उचित प्रेरणा भी देती है। परिणामस्वरूप कक्षा में खुशी का वातावरण बनाए रखने में सहायक होती है। यह शिक्षण सामग्री वास्तविक वस्तु, चित्र, चार्ट या कोई तकनीकी उपकरण इत्यादि हो सकती है, जो बच्चों के मस्तिष्क में एक बिंब का निर्माण करने में सहायक होती है। यह बच्चे के अधिगम को संज्ञानात्मक ढाँचे में उद्देश्यपूर्ण स्वरूप देने में सहायक होती है। अर्थात् शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुचारू, संगठित, नियोजित व रुचिपूर्ण बनाने के लिए अध्यापक द्वारा कक्षा में प्रयोग की गई किसी भी प्रकार की सामग्री को शिक्षण अधिगम सामग्री कहते हैं।

शिक्षण सहायक सामग्री के उद्देश्य

शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रयोग के मुख्य उद्देश्य शिक्षक द्वारा कक्षा कक्ष को रुचिपूर्ण बनाना है जिससे कक्षा के बच्चे सक्रिय होकर विषयवस्तु को ग्रहण कर सकें। इस प्रकार शिक्षक द्वारा बच्चों को रुचिपूर्ण तरीके से अधिगम कराया जा सकता है। साथ ही साथ कक्षा में शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग लक्ष्योन्मुखी शिक्षण को प्रभावी बनाने व बच्चों की कक्षा में सक्रियता को बढ़ाने के लिए भी किया जाता है। अग्रलिखित बिंदुओं के आधर पर शिक्षण सहायक सामग्री के उद्देश्य को समझा जा सकता है।

- बच्चों में विषयवस्तु के प्रति रुचि जागृत करना— शिक्षण सहायक सामग्री का उद्देश्य बच्चों में विषयवस्तु के प्रति रुचि जागृत करना है। शिक्षण सामग्री के आधर पर ही अध्यापक विषयवस्तु को सरल व साधारण तरीके से बच्चों तक पहुँचा पाता है जिससे बच्चे कक्षा में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। इस प्रकार बच्चे विषयवस्तु के प्रति अपनी रुचि को प्रदर्शित करते हैं तथा अध्यापक शिक्षण सहायक सामग्री के द्वारा विषयवस्तु में रुचि जाग्रत करने में सहयोगी होता है।
- बच्चों में समझने हेतु सूचनाओं को रोचक ढंग से प्रस्तुत करना— अधिगम का मुख्य उद्देश्य बच्चों के व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन करना होता है और व्यवहार को मुख्य रूप से तीन पक्षों में देखते हैं— क्रियात्मक, संज्ञानात्मक व व्यवहारात्मक। इस प्रकार शिक्षक शिक्षण सहायक सामग्री के द्वारा तीनों क्षेत्रों की सूचनाओं एवं अनुभवों को रुचिपूर्ण ढंग से बच्चों तक हस्तांतरण करने में सहायक होता है जिससे बच्चों के अधिगम में वृद्धि होती है।
- बच्चों के अधिगम में सुधार— शिक्षण सहायक सामग्री का महत्वपूर्ण उद्देश्य यह भी होता है कि यह बच्चों के अधिगम को दिशा देता है तथा अधिगम को और प्रभावशील बनाता है।
- बच्चों के अभिप्रेरण का माध्यम— जब शिक्षक कक्षा में शिक्षण सामग्री का प्रयोग करता है तो सभी बच्चों का ध्यान विषयवस्तु की ओर आकर्षित हो जाता है और बच्चों में बहुत-सी

© NCERT not to be republished

जिज्ञासा पैदा करने में सक्षम हो जाता है। जिससे बच्चों का अधिगम स्थाई होने के साथ-साथ सभी बच्चे कक्षा में सक्रिय होते हैं। फलस्वरूप खुशी का अनुभव करते हैं।

- सूचनाओं के प्रतिधारण में साहयक— शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया जब शिक्षण सामग्री के प्रयोग के साथ संपन्न होती है तो कक्षा के सभी बच्चे जो कक्षा में सूचनाएँ प्राप्त कर रहे हैं, उनका प्रतिधारण एक लम्बे समय तक रहता है। इस प्रकार जो अधिगम है वह प्रभावशील होने के साथ-साथ जीवनपर्यंत रहता है।
- तीव्र और विशिष्ट योग्यता वाले बच्चों को पढ़ाने में सहायक— शिक्षण सहायक सामग्री को कक्षा में प्रयोग करने का उद्देश्य यह भी होता है कि सभी बच्चों को उनकी बुद्धि के अनुसार ही उसे पढ़ाया जा सके। एक अच्छा शिक्षक बिना भेदभाव के कक्षा-कक्ष को सुचारु रूप से चलाने में सफल होता है। इस प्रकार कक्षा में समावेशी वातावरण उत्पन्न करने में सहायक होता है।
- जटिल विषयों को सरलता से पढ़ाना— सहायक सामग्री के द्वारा कक्षा में शिक्षक जटिल संप्रत्ययों को सरल रूप से प्रस्तुत करने में सहज अनुभव करता है। कक्षा में बच्चों के जटिल विषयवस्तु को साधारण रूप में प्रस्तुत करने में सक्षम होता है।
- बच्चों का ध्यान विषयवस्तु पर केंद्रित करना— कक्षा में शिक्षक द्वारा प्रयोग की गई शिक्षण सहायक सामग्री द्वारा बच्चों का ध्यान विषयवस्तु पर केंद्रित करने में सहायक होती है। अतः सभी बच्चे कक्षा में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं और विषयवस्तु को ग्रहण करते हैं।
- विषयवस्तु की स्पष्टता— शिक्षण साधनों का प्रयोग अध्ययन से संबंधित बहुत-से ऐसे विचारों, प्रक्रियाओं आदि को जिन्हें पुस्तकों से पढ़कर समझना तथा व्याख्यान विधि द्वारा पढ़ाना काफी मुश्किल होता है, उन्हें स्पष्ट रूप से बच्चों के सामने रखने से काफी सहायक सिद्ध होता है।
- व्यक्तिगत विभिन्नताओं की संतुष्टि में सहायक— प्रत्येक बच्चे में अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं। सभी एक ही तरह से अधिगम अनुभव अर्जित नहीं कर सकते हैं। कुछ बच्चे देखकर तो कुछ सुनकर तथा कुछ वस्तुओं को प्रत्यक्ष रूप से काम में लाकर अच्छे प्रकार से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार के शिक्षण साधनों की मदद से सभी प्रकार के बच्चों के अधिगम प्राप्ति का मार्ग सहज हो पाता है।
- अनुशासनहीनता की समस्या के हल में सहायक— बच्चों का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में निष्क्रिय रहना तथा व्याख्यान व पाठ्यपुस्तक आदि विधियों का कक्षा में प्रयोग किया जाना, कक्षा के वातावरण को नीरस तथा उबाऊ बना देता है। अतः कक्षा-कक्ष में शिक्षण साधनों का प्रयोग कक्षा के वातावरण को रोचक व सजीव बना देता है।
- अधिगम को मनोरंजक बनाना— प्राथमिक अवस्था में जब शिक्षक कक्षा में विभिन्न प्रकार के शिक्षण साहयक सामग्री का प्रयोग करता है तो कक्षा के सभी बच्चे सक्रिए रूप में सहभागी होकर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशील चलाने में सहयोगी होते हैं और खेल-खेल में सीखकर कक्षा में मनोरंजन करते हैं।

- विषय की अवधारणा बनाने में साहयक— शिक्षक विषयवस्तु को प्रस्तुत करने में जब शिक्षण सामग्री का प्रयोग करता है तो बच्चे काफी सक्रिय होते हैं अर्थात् अपनी सभी इन्द्रियों का प्रयोग करके विषय के प्रति एक अच्छी अवधारणा बनाने में साहयक हो पाते हैं। परिणाम के रूप में उनका अधिगम काफी मज़बूत होता है।

उपरोक्त बिंदुओं के आधार पर शिक्षक द्वारा शिक्षण सहायक सामग्री के उद्देश्यों को समझा जा सकता है जिससे अधिगम को अधिक प्रभावशील बनाया जा सकता है। सभी बिंदुओं से ये समझ आता है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रुचिपूर्ण बनाने में शिक्षण साहयक सामग्री की भूमिका अतुलनीय होती है अर्थात् प्राथमिक स्तर पर अधिगम को और रुचिपूर्ण बनाया जा सकता है और साथ ही साथ बच्चों का अधिगम भी स्थाई हो जाता है। इस तरह शिक्षण अधिगम सामग्री से बच्चे अपने ज्ञान का स्वयं निर्माण करते हैं जैसा की *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में भी कहा गया है कि अगर शिक्षक एक सुविधादाता के रूप में कार्य करता है तो वह बच्चों के ज्ञान निर्माण में सहायक होगा। इसलिए प्राथमिक स्तर पर बच्चों को सक्रिय रूप में भागीदार बनाने में शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग करना महत्वपूर्ण ही नहीं बल्कि अनिवार्य हो जाता है। इस प्रकार शिक्षण सहायक सामग्री शिक्षण प्रक्रिया में रीढ़ की हड्डी का कार्य करती है।

प्राथमिक स्तर पर शिक्षण सहायक सामग्री के प्रकार

शिक्षक कक्षा में पढ़ाते समय प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जिस शिक्षण सामग्री का प्रयोग करता है अर्थात् जिसके आधार पर वह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली व उपयोगी बनाता है, उसे ही शिक्षण सहायक सामग्री कहते हैं। मोटे रूप में जिसे निम्न प्रकार में वर्गीकृत किया जा सकता है—

परंपरागत उपागम

शिक्षण सहायक सामग्री परंपरागत उपागम है जिसमें सभी परंपरागत सहायक सामग्री को सम्मिलित किया जाता है। यह निम्न प्रकार से हो सकती है—

श्रव्य सामग्री

इस श्रेणी में वे सभी सामग्री समन्वित की जाती हैं। जिनका संबंध हमारी श्रवण इन्द्रियों से होता है। इनकी सहायता से अधिगमकर्ता सुनकर अधिगम प्राप्त करता है। इसमें मुख्य रूप से रेडियो, ग्रामोफ़ोन, टेपरिकार्डर, रिकार्ड लेक्चर आदि को सम्मिलत किया जाता है।

दृश्य सामग्री

इनका संबंध हमारी दृश्य इन्द्रियों से होता है, अधिगमकर्ता इसकी सहायता से देखकर नए ज्ञान का अधिगम करता है, जैसे— ओवरहेड प्रोजेक्टर।

दृश्य-श्रव्य सामग्री

इसमें सुनना व देखना दोनों प्रकार की इन्द्रियों का प्रयोग करके अधिगमकर्ता, अधिगम को प्रभावी बनाता है। इसमें टेलीविजन, वीडियों, कंप्यूटर आदि को सम्मिलित किया जाता है।

तकनीकी उपागम

इस उपागम में शिक्षण अधिगम सामग्री को निम्न प्रकार के वर्गों में विभाजित किया जाता है—

- कठोर उपकरण
- मृदुल उपकरण

© NCERT not to be republished

कठोर उपकरण

इस प्रकार की शिक्षण सहायक सामग्री में उन शिक्षण उपकरणों को रखा जाता है, जो तकनीकी दृष्टि से मशीनी या यंत्र प्रकृति के होते हैं, जैसे— स्लाइड प्रोजेक्टर, ओवर हेड प्रोजेक्टर, रेडियो, टेलीविजन, वीडियो इत्यादि।

मृदुल उपकरण एवं सामग्री

इस वर्ग में वे सभी सरल और मृदुल सामग्री शामिल की जाती हैं जैसे— फ़िल्म स्ट्रिप, फ़्लैश कार्ड, इत्यादि।

अत: प्राथमिक स्तर के अधिगम को स्थायी व रुचिपूर्ण बनाने के लिय उपरोक्त सभी शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग किया जा सकता है और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को और भी मनोरंजनपूर्ण बनाया जा सकता है।

हैप्पीनेस पाठ्यचर्या की शिक्षण सहायक सामग्री

हैप्पीनेस पाठ्यचर्या में बच्चों को इन्द्रियों से मिलने वाली खुशी के साथ-साथ भाव/संबंध में मिलने वाली खुशी के लिए माइंडफुलनैश गतिविधि जिसमें बच्चों को प्रतिदिन ध्यान देने की प्रक्रिया का अभ्यास कराया जाता है। जो आयु के अनुसार बच्चों को आसपास की आवाज़ों, वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करने से लेकर साँसो और फिर विचारों पर ध्यान केंद्रित करने का अभ्यास कराया जाता है। फिर अध्यापक हेतु बनायी पुस्तक में से सप्ताह में दो दिन बच्चों को उनकी ज़िंदगी से जुड़ी कहानी सुनाई जाती है फिर प्रश्नों के द्वारा चर्चा करायी जाती है। जिसमें सभी बच्चों की भागीदारी आवश्यक होती है। सप्ताह के अगले दो दिन बच्चों के अधिगम हेतु कुछ गतिविधि कक्षा-कक्ष में अध्यापक के देख-रेख में करायी जाती है। गतिविधि के दौरान आवश्यक सामग्री का प्रयोग अध्यापक करते है। जिससे बच्चे अनुभव करके सीख सकें। सप्ताह के अंतिम दिवस में बच्चे अपने अनुभवों को कक्षा-कक्ष में साझा करते है।

कक्षा-कक्ष में शिक्षक की भूमिका

प्राथमिक स्तर के शिक्षण में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। क्योंकि बच्चों में जानने की अंतर्निहित प्रवृत्ति होती है, जिसका अगर शिक्षण अधिगम में सही उपयोग किया तो बच्चों का अधिगम सकारात्मक रूप से प्रभावित होगा। बच्चों के अधिगम संवर्धन हेतु कक्षा-कक्ष में शिक्षण के दौरान अध्यापक अगर शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग करता है तो बच्चे उन्हें इन्द्रियों से अवलोकन करते हैं परिणामस्वरूप हैप्पीनेस त्रय में प्रस्तावित संवेदनाओं से बच्चे क्षणिक सुख महसूस करते हैं। अध्यापक को चाहिए कि वह बच्चों की संवेदनाओं के अनुसार शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग अधिक करें। इससे बच्चों का ध्यान विषयवस्तु पर केंद्रित होगा और वे विषयवस्तु को इन्द्रियों के माध्यम से ग्रहण करेंगे। शिक्षण सहायक सामग्री के साथ-साथ बच्चों को उनके वास्तविक जीवन से जुड़ी कुछ व्यावहारिक कहानियों का प्रयोग भी कराए। हैप्पीनेस कक्षा की शिक्षण पद्धति के अनुसार बच्चे जो भी सुनते या देखते हैं तो अध्यापक उनके अनुभव को कक्षा में चर्चा के माध्यम से अभिव्यक्त करने का मौका दें। अध्यापक को चाहिए कि बच्चों की अभिव्यक्ति को गलत या सही ना कहें बल्कि सभी बच्चों को उनके अनुभव

व्यक्त करने के लिए प्रेरित करें। जिससे बच्चों की चिंतन क्षमता का विकास होगा।

बच्चों द्वारा कहानी या गतिविधि के दौरान सुने या देखे गए अनुभवों पर अध्यापकों को अपना मत नहीं रखना चाहिए। क्योंकि ऐसा करने से बच्चे स्वयं का मत न रख कर वे अध्यापक की नज़र में अच्छा होने के लिए उनके मत अनुसार बोलने का प्रयास करते हैं। हैप्पीनेस पाठ्यक्रम शिक्षण सहायक सामग्री, कहानियों एवं गतिविधियों के माध्यम से इन्द्रियजन्य जो अनुभव बच्चों को दिए जाते हैं, उन पर बच्चों के विचार जानना अध्यापक के लिए ज़रूरी है। ऐसा करने से बच्चे कक्षा में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। परिणामस्वरूप बच्चों की चिंतन क्षमता का विकास होता है और वे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उत्साहपूर्वक भागीदारी प्रदान करते हैं। इस प्रकार बच्चों के अधिगम संवर्धन में इन्द्रिय जनित अनुभवों का समावेश करना शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आवश्यक हो जाता है।

प्राथमिक स्तर पर शिक्षण सहायक सामग्री का कक्षा में उपयोग करना भी बहुत बड़ी कला है अर्थात् उसका प्रयोग करते समय बहुत सी सावधानियों की ज़रूरत होती है। हैप्पीनेस कक्षा में अध्यापक के लिए विशेष निर्देश दिए गए हैं कि वे बच्चों के अनुभवों को ध्यान से सुनें और उनको बीच में टोका-टाकी न करें। अपने विचार या मत भी बच्चों को मानने के लिए ना कहें बल्कि उनको स्वतंत्र रूप से चिंतन करने और समझ विकसित करने का मौका दें। इससे स्पष्ट होता है कि प्राथमिक स्तर पर शिक्षक यदि सहायक सामग्री का प्रयोग सही रूप में नहीं करता है और बच्चों को व्यक्त होने का मौका नहीं दिया जाता है तो बच्चों के विषय से भटकने की अधिक संभावना होती है अत: शिक्षक को शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग करते समय निम्न सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए—

शिक्षण सामग्री का सही चुनाव

शिक्षक को शिक्षण सामग्री का चुनाव करते समय कक्षा में उपस्थित सभी बच्चों को इन्द्रियजनित अनुभव करने का मौका अवश्य देना चाहिए। ऐसा नहीं करने पर बच्चों में विषय को लेकर काफी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। फलस्वरूप बच्चों के विषयवस्तु की अवधारणा स्थापित होने में काफी कठिनाई भी होती है।

भाषा की स्पष्टता

शिक्षक को शिक्षण सामग्री का चुनाव करते समय भाषा की स्पष्टता होनी चाहिए। जिससे बच्चों को कक्षा में किसी भी प्रकार की विषयवस्तु को समझने में कठिनाई न हो अर्थात् भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।

विषयवस्तु की व्यावहारिकता

हैप्पीनेस पाठ्यक्रम में विषयवस्तु को बच्चों की ज़िंदगी से जोड़ने पर केंद्रित किया गया है जिससे बच्चों का ध्यान आसानी से विषयवस्तु को ग्रहण कर ले। क्योंकि वास्तविकता के दर्शन होने से उसका चित्रण बच्चों के संज्ञान में हो जाता है जिससे वे अपने पूर्व अनुभवों के साथ जोड़कर अपनी बात रख पाते हैं। इसलिए शिक्षक को शिक्षण सामग्री का चुनाव विषयवस्तु को व्यवहारिक बनाने के लिए करना चाहिए।

© NCERT not to be republished

शिक्षण अधिगम सामग्री के रूप में इन्द्रियों का प्रयोग

शिक्षक को प्राथमिक कक्षा में ज़्यादा से ज़्यादा शिक्षण के दौरान बच्चों की इन्द्रियों का प्रयोग करके विषयवस्तु को प्रस्तुत करना चाहिए, जिससे बच्चों का विषयवस्तु के साथ जुड़ाव ज़्यादा हो पाए जो बच्चों में जुड़ाव के साथ-साथ चिंतन करने के लिए प्रेरित करे।

उपरोक्त से ये समझा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर के शिक्षण-अधिगम में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि प्राथमिक स्तर पर बच्चों की आयु के अनुसार इन्द्रियजनित अनुभव हेतु शिक्षण सहायक सामग्री और फिर चर्चा/बातचीत द्वारा विषयवस्तु से जुड़ाव एवं समझ हेतु अध्यापक सही मार्गदर्शन कर सकता है। जिससे बच्चे इन्द्रियों के द्वारा शिक्षण सहायक सामग्री से मिलने वाली खुशी और विषयवस्तु की पूर्ण समझ आने पर स्थायी खुशी अर्थात बच्चों का अधिगम संवर्धन हो सकेगा।

शिक्षक को शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग करते समय कुछ निम्न सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए—

- शिक्षण सामग्री का सही चुनाव— शिक्षक को शिक्षण सामग्री का चुनाव करते समय कक्षा में उपस्थित सभी बच्चों की रुचि, योग्यता, भाषा और सामग्री का विषय के साथ संदर्भ ज़रूर देख लेना चाहिए। ऐसा नहीं करने पर बच्चों में विषय को लेकर काफी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। फलस्वरूप बच्चों के विषयवस्तु की अवधारणा स्थापित होने में काफी कठिनाई भी होती है।
- भाषा की स्पष्टता— शिक्षक को शिक्षण सामग्री का चुनाव करते समय भाषा की स्पष्टता होनी चाहिए जिससे बच्चों को कक्षा में किसी भी प्रकार की विषयवस्तु को समझने में कठिनाई न हो अर्थात भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।
- विषयवस्तु से सारगर्भित— शिक्षक को शिक्षण सामग्री का चुनाव करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि प्राथमिक स्तर पर बच्चों के ध्यान में चंचलता होती है। इसलिए अगर शिक्षण सामग्री सारगर्भित नहीं हुई तो वह विषयवस्तु को भी नहीं समझ पाएगा जिसके परिणामस्वरूप बच्चों का जुड़ाव विषय से कम होता जाएगा। इसलिए शिक्षक को शिक्षण सामग्री का चुनाव ठीक से करना चाहिए।
- शिक्षण अधिगम सामग्री के रूप में इन्द्रियों का प्रयोग— शिक्षक को प्राथमिक कक्षा में ज़्यादा से ज़्यादा शिक्षण के दौरान बच्चों की इन्द्रियों का प्रयोग करके विषयवस्तु को प्रस्तुत करना चाहिए, जिससे बच्चों का विषयवस्तु के साथ जुड़ाव ज़्यादा हो पाए, जो स्थाई अधिगम करने में सहायक हो सके।
- पॉइंटर का प्रयोग — प्राथमिक स्तर पर शिक्षक को चाहिए कि शिक्षण सामग्री का प्रयोग पॉइंटर के साथ करना चाहिए जिससे विषय को समझने में स्पष्टता बनी रहे अन्यथा कभी-कभी इसकी वजह से कक्षा में शोर होना शुरू हो जाता है और परिणाम यह होता है कि बच्चों का ध्यान विषय से भटक जाता है।
- उपरोक्त बिंदुओं से ये समझा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर के शिक्षण-अधिगम में शिक्षक

© NCERT not to be republished

की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि प्राथमिक स्तर पर बच्चों की आयु के अनुसार इन्द्रियजनित अनुभव हेतु शिक्षण सहायक सामग्री और फिर चर्चा/बातचीत द्वारा विषयवस्तु से जुड़ाव एवं समझ हेतु शिक्षक सही मार्गदर्शन कर सकता है। जिससे बच्चे इन्द्रियों के द्वारा शिक्षण सहायक से मिलने वाली खुशी और विषयवस्तु समझ आने पर स्थाई खुशी अर्थात् बच्चों का अधिगम संवर्धन हो सके।

निष्कर्ष

हैप्पीनेस कार्यक्रम मुख्य रूप से दिल्ली के सरकारी विद्यालयों की प्राथमिक कक्षाओं में चल रहा है जिसमें बच्चों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया माइंडफुल जैसी क्रियाओं से शुरू किया जाता है। इस क्रिया के द्वारा बच्चों में वर्तमान के क्रियाकलापों पर ध्यान रखने की आदत को विकसित किया जाता है, जैसा कि मनोवैज्ञानिकों के अनुसार प्राथमिक स्तर पर बच्चों के ध्यानपूर्वक सुनने का समय काफ़ी कम होता है। इस क्रिया के द्वारा बच्चों की मानसिक चंचलता कम होती है और कक्षा की वर्तमान की सभी क्रियाकलापों पर ध्यान देना शुरू कर देते हैं। प्राथमिक स्तर की इस पहल के आधार पर कक्षा के सभी बच्चे आत्मनिर्भर होकर शिक्षा प्राप्त करते हैं। इसमें बच्चों की कक्षा में भागीदारी के लिए पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की जाती है जिसके आधार पर बच्चे तर्कपूर्ण ढंग से विषयवस्तु को सीखते हैं और स्वयं को अभिव्यक्त करने में सफल हो पाते हैं। हैप्पीनेस कक्षाओं में केवल बाल केंद्रित विधियों के आधार पर ही बच्चों में आत्मविश्वास और उनकी आत्मभिव्यक्ति पैदा की जाती हैं। कक्षाओं में अध्यापक कहानियों, रोल प्ले और बातचीत जैसी शिक्षण विधिओं द्वारा विषयवस्तु को बच्चों तक हस्तांतरित करता है। इस तरह हैप्पीनेस कक्षाओं में अध्यापक की भूमिका गौण होती है जैसा की *राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा 2005* में भी कहा गया है कि कक्षा में अध्यापक की भूमिका एक प्रेरक की होनी चाहिए जिससे बच्चे अपने आप को पूर्ण रूप से अध्यापक के सामने अभिव्यक्त कर सकें और शिक्षण अधिगम में उत्साहपूर्वक अपनी भागीदारी दे सकें। जैसा की प्रस्तुत लेख प्राथमिक स्तर पर बच्चों की इन्द्रियजनित संवेदनाओं पर आधारित है जिसमें बच्चे संवेदनाओं को सूचनाओं के संप्रेषण के लिए अधिकाधिक उपयोग करते हैं और जिससे बच्चे खुशी का अनुभव करते हैं। फलस्वरूप बच्चों का ध्यान विषयवस्तु पर अधिक समय तक बना रहता है जो विषयवस्तु के समझ में सहायक होता है। इसलिए विभिन्न प्रकार की शिक्षण सहायक सामग्री की भूमिका महत्वपूर्ण है। जिस तरह शरीर में रीढ़ की हड्डी की भूमिका है उसी प्रकार कक्षा-कक्ष को सुचारु और रुचिपूर्ण बनाने के लिए शिक्षण-सहायक सामग्री की भूमिका अकथनीय है। हैप्पीनेस कक्षा में अध्यापक, पाठ्यसामग्री को बच्चों की आवश्यकताओं, योग्यताओं, रुचियों और मानसिक स्तर के अनुसार बच्चों की ज़िंदगी से जुड़ी कहानियों एवं गतिविधियों से विषयवस्तु का हस्तांत्रण करना सरल होता है। जो बच्चों को गहरी खुशी अर्थात् अधिगम संवर्धन हेतु प्रेरित करती है। इस प्रकार की सामग्री के द्वारा शिक्षक बच्चों में स्थायी रूप से सीखने

और प्रत्यक्ष अनुभव के द्वारा सीखने पर ज़ोर देते हुए कक्षा में बच्चों की लम्बे समय तक सक्रियता बढ़ाने के लिए प्रयास करते हैं। शिक्षण-सहायक सामग्री द्वारा बच्चों का ध्यान आकर्षित करके बच्चों को मिलने वाली क्षणिक खुशी से बच्चों का ध्यान विषयवस्तु पर केंद्रित होने से अधिगम संवर्धन में सहायता मिलती है।

संदर्भ

एस.सी.ई.आर.टी. 2019. *टीचर हैन्डबुक फॉर हैप्पीनेस क्लास-ग्रेड VIII.* 2019. स्टेट काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग, दिल्ली.

———. *हैप्पीनेस करिकुलम 2019.* स्टेट काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग, दिल्ली एवं शिक्षा निदेशालय.

गुप्ता, महिमा और शुकल. 2009. *अधिगम एवं शिक्षण*. पृ. 6. आर.लाल. पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ 250001.

नागराज, ए. 1999. *मानव व्यवहार दर्शन*. जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकंटक (म.प्र.).

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् , दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.

© NCERT not to be republished